Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوۃَ وَ اٰتَوُا الزَّکٰوۃَ لَھُمۡ اَجۡرُھُمۡ عِنۡدَ رَبِّھِمۡ ۚ وَ لَا خَوۡفٌ عَلَیۡھِمۡ وَ لَا ھُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :278)

अनुवाद: निसन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए और उन्होंने नमाज़ को स्थापित किया और ज़कात अदा की उन के लिए उन का बदला उन के रब्ब के निकट है और उन पर कोई भय नहीं होगा और न वे भयभीत होंगें।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

अंक 45

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

29 सफर 1439 हिजरी कमरी 8 नबुव्वत 1397 हिजरी शमसी 8 नवम्बर 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

यह धोखा न लगे कि सुन्नत और हदीस एक ही वस्तु है। क्योंकि हदीस तो सौ डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् एकत्र की गयी। परन्तु सुन्नत का अस्तित्व क़ुर्आन शरीफ़ के साथ ही था।

सुन्नत से तात्पर्य वह मार्ग है जिस पर क्रियात्मक रूप में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने साथियों को डाल दिया था। सुन्नत उन बातों का नाम नहीं है जो सौ डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् पुस्तकों में लिखी गयी, बल्कि उन बातों का नाम हदीस है और सुन्नत उस क्रियात्मक आदर्श का नाम है जो नेक मुसलमानों की क्रियात्मक परिस्थिति में प्रारम्भ से चला आया है, जिस पर सहस्त्रों मुसलमानों को लगाया गया

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

दूसरा साधन पथ-प्रदर्शन का जो मुसलमानों को प्रदान किया गया **सुन्नत** है अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वे कार्य जो आपने क़ुर्आनी आदेशों की व्याख्या स्वरूप करके दिखाए। उदाहरणार्थ- क़ुर्आन शरीफ़ में साधारण दृष्टि से देखने से **पांच समय** की नमाज़ों (उपासना) की रकआत का ज्ञान नहीं होता कि प्रात: कितनी और अन्य समयों में कितनी हैं परन्तु सुन्नत ने सब पर प्रकाश डाल दिया है। यह धोखा न लगे कि सुन्नत और हदीस एक ही वस्तु है। क्योंकि हदीस तो सौ डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् एकत्र की गयी। परन्तु सुन्नत का अस्तित्व क़ुर्आन शरीफ़ के साथ ही था। मुसलमानों पर क़ुर्आन शरीफ़ के पश्चात् सबसे बड़ा उपकार सुन्नत का है। ख़ुदा और रसूल के दायित्व का कर्तव्य केवल दो मामले थे। वह यह कि ख़ुदा ने क़ुर्आन उतार कर अपनी वाणी द्वारा अपनी प्रजा को अपनी इच्छा से अवगत कराया। यह तो ख़ुदा के कानून का कर्तव्य था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कर्तव्य यह था कि ख़ुदा की वाणी को क्रियान्वित करके लोगों को भली भांति समझा दें। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वे कथनी बातें करनी के रंग में दिखला दीं और अपनी सुन्नत अर्थात् अमली कार्यवाही से कठिन और मुश्किल मामलों को हल कर दिया। यह कहना व्यर्थ है कि यह हल करना हदीस पर आश्रित था, क्योंकि हदीस के अस्तित्व से पूर्व इस्लाम धरती पर स्थापित हो चुका था।★ क्या जब तक हदीसें एकत्र नहीं हुई थीं लोग नमाज़ न पढ़ते थे या ज़कात न देते थे या हज न करते थे या वैध या अवैध से परिचित न थे। हाँ तीसरा साधन **पथ-प्रदर्शन का हदीस है।** क्योंकि इस्लाम के बहुत से ऐतिहासिक, नैतिक और धार्मिक नियमों से संबंधित मामलों को हदीसें स्पष्ट करती हैं और हदीस का बड़ा लाभ यह है कि वह क़ुर्आन और सुन्नत की सेवक है। जिन लोगों को क़ुर्आन का सही ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ वे इस अवसर पर हदीस को क़ुर्आन पर निर्णायक कहते हैं जैसा कि यहूदियों ने अपनी हदीसों के विषय में कहा। पर हम हदीस को क़ुर्आन और सुन्नत का सेवक समझते हैं। स्पष्ट है कि स्वामी की शान सेवकों के होने से बढ़ती है। क़ुर्आन ख़ुदा की वाणी है और सुन्नत रसूलुल्लाह का कर्म है और हदीस सुन्नत के लिए एक समर्थक साक्षी है। (ख़ुदा हर बुराई से अपनी शरण में रखे) यह कहना अनुचित है कि हदीस क़ुर्आन को निर्णायक है। यदि क़ुर्आन पर कोई निर्णायक है तो वह स्वयं क़ुर्आन है। हदीस जो एक विचारात्मक रुतबा रखती है, क़ुर्आन पर निर्णायक कदापि नहीं हो सकती, मात्र सहयोगी प्रमाण के रंग में है। क़ुर्आन और सुन्नत ने मूल कार्य सब कर दिखाया है। हदीस केवल समर्थक साक्षी है। हाँ सुन्नत एक ऐसी वस्तु है जो क़ुर्आन का उद्देश्य प्रकट करती है, और सुन्नत से तात्पर्य वह मार्ग है जिस पर क्रियात्मक रूप में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने साथियों को डाल दिया था। सुन्नत उन बातों का नाम नहीं है जो सौ डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् पुस्तकों में लिखी गयी, बल्कि उन बातों का नाम हदीस है और **सुन्नत** उस क्रियात्मक आदर्श का नाम है जो नेक मुसलमानों की क्रियात्मक परिस्थिति में प्रारम्भ से चला आया है, जिस पर सहस्त्रों मुसलमानों को लगाया गया। हाँ हदीस भी, यद्यपि कि उसका अधिकांश भाग विचारात्मक स्तर पर है, परन्तु यदि वह क़ुर्आन और सुन्नत की विरोधी न हों तो अनुसरण करने योग्य है और क़ुर्आन व सुन्नत की समर्थक है। अधिकांश इस्लामी मामलों का भण्डार उसके अन्दर मौजूद है। **अत: हदीस** के महत्त्व को न समझना इस्लाम के एक भाग को काट देना है। हाँ यदि कोई ऐसी हदीस जो क़ुर्आन और सुन्नत की विरोधी हो तथा ऐसी हदीस की विरोधी हो जो क़ुर्आन के अनुकूल है या उदाहरणार्थ एक ऐसी हदीस जो सही बुखारी के विपरीत है तो वह हदीस स्वीकार योग्य नहीं होगी, क्योंकि उसे स्वीकार करने से क़ुर्आन को और उन समस्त हदीसों को जो क़ुर्आन के अनुकूल हैं रद्द करना पड़ता है और मैं जानता हूँ कि कोई संयमी मुसलमान इसका साहस नहीं करेगा कि ऐसी हदीस पर आस्था रखे कि वह क़ुर्आन और सुन्नत के विपरीत और ऐसी हदीसों का विरोधी है जो क़ुर्आन के अनुकूल हैं। अत: हदीसों के महत्त्व को समझो और उन से लाभ उठाओ कि वे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर सम्बद्ध हैं, जब तक क़ुर्आन और सुन्नत को झुठलाए, तुम भी उनको न झुठलाओ। बल्कि तुम्हें चाहिए कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों का इस प्रकार अनुसरण करो कि तुम्हारी किसी भी हरकत और किसी भी सुकून, तुम्हारे किसी भी कर्म या उसके परित्याग के पीछे उसके समर्थन में तुम्हारे पास कोई हदीस हो। यदि कोई ऐसी हदीस हो जो क़ुर्आन शरीफ़ की उल्लिखित घटनाओं के पूर्णतया भिन्न है तो उसकी अनुकूलता हेतु चिन्तन करो। संभव है

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-13)

☆ हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आप अपने ख़ुद्दाम को एम,टी,ए से जोड़ दें। हम वर्ष में एम,टी,ए पर एक मिलयन पाउंड खर्च करते हैं। ऐसा इसलिए है कि आप लोग एम,टी,ए से संलग्न हों और आपकी तरबियत के साधन हों।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि कितने हैं जो नियमित सप्ताह में एम,टी,ए के चार दिन या तीन दिन या दो दिन देखते हैं। यदि ध्यान दिलाएं तो ख़ुद्दाम को ध्यान होगा। हुज़ूर अनवर ने मुहतमिम तरबियत को फरमाया कि यहां काम कर के दिखाएं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अपनी पत्रिका का आरम्भ कुरआन की एक आयत और इस का अनुवाद और इस की संक्षिप्त व्याख्या के साथ करें। फिर कुछ हदीस लें, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का उद्धरण उद्धृत करें। ख़ुत्बों से से अलग-अलग बातें लें, तरबियती पहलुओं पर लेख और निबन्ध लें। यदि आप ख़ुद्दाम में रुचि पैदा करेंगे तो ख़ुद्दाम फिर इस में लेख भी लिखेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया माली कुर्बानी अल्लाह तआला का आदेश है चन्दा का अदा करना अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए है चन्दा हरगिज़ कोई टेक्स नहीं है ।

नेशनल मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया स्वीडन की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

21 मई 2016 (शनिवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने सुबह तीन बजकर 45 मिनट पर मस्जिद नासिर तशरीफ लाकर नमाज फजर पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर गए।

सुबह, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने डाक, पत्र और रिपोर्टों को देखा। यहाँ गौथन बर्ग प्रवास के दौरान भी लंदन केंद्र और अन्य विभिन्न देशों से नियमित दैनिक पत्र और रिपोर्टे Fax और ईमेल के माध्यम से प्राप्त होती हैं और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ दैनिक साथ के साथ ये डाक देखते हैं और अपने दस्ते मुबारक से निर्देश देते हैं।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए और परिवारों से मुलाकातें शुरू होएँ। आज सुबह इस सत्र में 40 परिवारों के 126 व्यक्तियों ने अपने प्यारे आक़ा मिलने की सआदत पाई। आज मुलाकात करने वालों में गॉथेनबर्ग की स्थानीय जमाअत के अलावा, स्वीडन के होम स्टॉक हाउस से आने वाले परिवार ने भी मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। इसके अलावा, नॉर्वे और फिनलैंड से आने वाले लोगों ने भी मुलाकात का सौभाग्य पाया। इसी तरह, पाकिस्तान से आने वाले कुछ लोगों ने भी मुलाकात का सौभाग्य पाया। हर किसी ने अपने प्रिय आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुएअ शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी आयु के बच्चों को चाकलेट दिए। मुलाकातों का यह प्रोग्राम दोपहर दो बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे।

निकाह के एलान

नमाज़ अदा करने के बाद आदरणीय आग़ा याह्या ख़ान मुबल्लिग़ इन्चार्ज स्वीडन ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की अनुमति से एक निकाह की घोषणा की। हुज़ूर अनवर करूणा करते हुए इस दौरान पधारे रहे। यह निकाह प्रिया आमना हलीम लौन पुत्री आदरणीय अब्दुल हलीम लौन साहिब डेनमार्क का प्रिय इरफान अहमद इब्ने आदरणीय मुबारक अहमद साहिब मरहूम (स्वीडन) के बीच तय पाया था। एलान निकाह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अल्लाह तआला ने दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे।

नेशनल मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया स्वीडन की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ मुलाकात हॉल में आए जहां राष्ट्रीय मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया स्वीडन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात हुई। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। इस के बाद मुअतमिद ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि हमारी चार मज्लिसें हैं और मज्लिसें अपनी मासिक रिपोर्ट भिजवाती हैं। इन सभी रिपोर्टों के प्रकाश में, एक फाइनल रिपोर्ट तैय्यार करके सदर साहिब को देता हूं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि क्या मुहतमिम अपने अपने संबंधित क्षेत्रों की रिपोर्टों पर कोई टिप्पणी करते हैं और उन्हें वापस मज्लिसों को भिजवाते हैं। इस पर सैक्रेटरी ने बताया कि दो तीन मुहतमिम भिजवाते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि हर मुहतमिम को अपने अपने विभाग की रिपोर्ट पर टिप्पणी करके वापस मज्लिसों को भिजवाना चाहिए। सप्ताह में एक बार, महीने में दो बार आकर अपने अपने विभाग की रिपोर्टों को देखा करें और फिर उन पर अपनी टिप्पणी करें और वापस अपने अपने क्षेत्रों के नाज़मीन को भिजवाया करें।

* हुज़ूर अनवर ने मुहतमिम अमूरे तुल्बा से पूछा कि विश्व विद्यालयों और कॉलेजों में आपके छात्रों की संख्या क्या है? मज्लिसों से पता लगाएं कि विश्वविद्यालय और कॉलेजों में कितने छात्र पढ़ रहे हैं। आपके इन छात्रों के साथ व्यक्तिगत संपर्क होना चाहिए। अपना छात्र संघ बनाएं। इन की संगोष्ठियों को व्यवस्थित करें। इस तरह, वे एक साथ होंगे और ख़ुद्दाम के कार्यक्रमों में रुचि पैदा होगी।

मुहतमिम माल से हुज़ूर ने पूछा कि कितने ख़ुद्दाम चन्दा देते हैं इस पर मुहतमिम ने बताया कि 222 ख़ुद्दाम चन्दा देते हैं और हमारा बजट 2,89,000

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वफा का उहद बांध कर इसे अन्तिम सांस तक निभाने वाले बदरी सहाबा का ज़िक्रे ख़ैर।

पहले सदर जमाअत अहमदिया मलेशिया उंगको अदनान इस्माइल (Ungku Adnan Ismail) साहिब और आदरणीया हमीदा बेगम साहिबा पत्नी चौधरी ख़लील अहमद साहिब रबवा का नमाज जनाज़ा ग़ायब और ज़िक्रे ख़ैर।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 अक्तूबर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज, मैं जिन सहाबा का उल्लेख करने लगा हूं उनकी घटनाओं और रिवायतों को ने इतिहास ने विस्तार से संरक्षित नहीं किया। उनका संक्षिप्त परिचय ही है जो कुछ पंक्तियों में वर्णित हुआ परंतु क्योंकि मैं चाहता हूँ कि एक बार सभी बद्री सहाबियों का उल्लेख एक जगह जमाअत के साहित्य में भी आ जाए इसलिए संक्षिप्त परिचय वाले नामों को भी ले रहा हूँ। वैसे भी उन सहाबा जो स्थान था और है उन लोगों का ज़िक्रे ख़ैर भी या उन को याद करना भी हमारे लिए बरकत का कारण है। ये वे लोग थे जो गरीब और कमजोर होने के बावजूद धर्म की रक्षा करने वालों में सफ्फे अव्वल में थे। दुश्मन की शक्ति से भयभीत नहीं हुए, बल्कि उन का सारा भरोसा अल्लाह तआला की हस्ती पर था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वफा का उहद किया तो उस के लिए अपनी जानें कुरबान करने से पीछे न हटे। उनके इस वादा को निभाने के कारण से अल्लाह तआला ने भी उन को जन्नत की बिशारत दी और उन से राज़ी होने का एलान फरमाया।

हज़रत अब्दुल रबी बिन हक बिन औस एक सहाबी थे। उनके पास एक से अधिक रायें हैं। कुछ ने अब्दे रबी और कुछ ने अब्दुल्लाह लिखा है। इब्ने इस्हाक़ के निकट उनका नाम अब्दुल्लाह बिन हक जबकि इब्ने अमारा के अनुसार अब्दे रब बिन हक है उनका संबंध बनू खज़रिज के ख़ानदान बनू साद से था और आप जंग बद्र में शामिल हुए थे।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 317-318 " अब्दुल रब्बा बन अधिकार " मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

फिर सल्मा बिन साबित हैं, उनका पूरा नाम सलमा बिन साबित बिन वक्श है। हज़रत सलमा जंग बद्र में शरीक हुए जंग उहद में अबू सुफयान ने हज़रत सलमा बिन साबित को शहीद किया था। हज़रत सलमा के पिता हज़रत साबित बिन वकश और चाचा हज़रत रफाअत बिन वकश और उनके भाई हज़रत अम्रो बिन साबित भी जंग उहद में शहीद हुए थे। इस ख़ानदान के बहुत सारे सदस्यों ने जंग उहद में भाग लिया। उनकी मां का नाम लैला बिनत यमान था, जो हुज़ैफा बिन यमान की बहन थीं।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 234 सलमा बिन साबित बिन वकश, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई ई)(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 291 सलमा बिन साबित, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई ई)

फिर सनान बिन सैफी हैं इन का सम्बन्ध खज़रज के कबीला बनू सलमा से था। उनकी मां का नाम नायला बिनत क़ैस था। उनका एक बेटा मसूद भी था। 12 नबवी में मसअब बिन उमैर की तब्लीग़ के कारण उन्होंने इस्लाम को स्वीकार कर लिया। यह बैअत उक़बा सानिया के अवसर पर अन्य सत्तर अंसार के साथ शामिल हुए और जंग बद्र और उहद में शरीक हुए।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 291, वमन बनी उबैद बिन अदि ..., सिनान बिन सैफी, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी 1996 ई), (हबीब कबरिया के तीन सौ असहाब तालिब हाश्मी पृष्ठ 325, नदीम यूनुस प्रिंटर लाहौर 1999 ई) जंग उहद में भी शामिल थे और इसमें आप को शहादत नसीब हुई।

(अस्सैरतुन नबिवय्या ले इब्ने हश्शाम भाग 1 पृष्ठ 276 अध्याय अस्मा मन शहेदा, दारुल कुतुब अल-अरबी बैरूत 2008 ई)

फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुनाफ हैं उनका संबंध कबीला बनू नोमान से था। (अस्सैरतुन नबिवय्या ले इब्ने हश्शाम भाग द्वितीय पृष्ठ 410, मन हज़रत बदरन मिनल मुसलेमीन,दारुल कुतुब अल-अरबी बैरूत 2008) अबू याहया उनका उपनाम था उनकी वालदा हमीमह पुत्री उबैद थीं। उनकी एक बेटी थीं उनका नाम भी हुमैमह था जिसकी माँ रुबैअ पुत्री तुफ़ैल थीं। आप जंग बद्र और उहद में शरीक हुए थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 292 अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुनाफ, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

फिर हज़रत मुहिज़र बिन आमिर मलिक हैं। उनकी मृत्यु जंग उहद के लिए निकलने वाली सुबह के समय हुई थी। उनका पूरा नाम मुहिज़र बिन आमिर था। उन का बनू आदी बिन नज़र से संबंध थे। उनकी मां का नाम सादी बिन खालिद बिन हारिस था और उन का सम्बन्ध और कबीला से था। उनकी मां हज़रत साद बिन ख़समा की बहन थीं। उन के बारे में लिखा है कि उम्मे सुहल बिन अबी ख़ारिजा से आप की औलाद असमा और कुलसूम थीं। आपने जंग बदर में भाग लिया। जिस दिन आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग उहद के लिए निकलना था उस दिन सुबह के समय उनकी मृत्यु हो गई थी। उन ती गिनती उन लोगों में की गई है जो जंग उहद में शामिल हुए थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 388 महरज़ बिन आमिर, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) क्योंकि शामिल होने का इरादा था इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें शामिल होने वालों में गिना था।

हज़रत आयज़ बिन माइस अंसारी सहाबी हैं। वह अंसार के बनू सियोन कबीला से संबंधित थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका भाईचारा हज़रत सवीबत बिन हरमला से करवाया था। आप अपने भाई हज़रत मआज़ बिन आयस के साथ जंग बगदर में शामिल हुए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सारी जंगों में शामिल हुए । हज़रत आयज़ बिन माइस बेयर माऊना और जंग क़ंदक में शरीक हुए और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सभी जंगों में शरीक थे। हज़रत अबु बकर के दौरे खिलाफ़त में 12 हिजरी में जंग यमामा में शहीद हुए।

(असदुल ग़ाबः फी मअरफतिल सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 43 झयज़ बन मास मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई),

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 301 झयज़ बन मास दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी 1996 ई)

फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा बिन मलिक अंसारी हैं। आप अंसार के

कबीला बिल्ली से संबंधित थे। जंग बद्र और उहद में शरीक हुए और जंग उहद में शहीद हुए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा जब शहीद हुए तो उन्हें और हज़रत मजज़्ज़र बिन ज़याद को एक ही चादर में लपेट कर ऊंट पर मदीना लाया गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा की मां आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आईं और अर्ज़ किया हे रसूलल्लाह! मेरा बेटा जंग बद्र में शरीक हुआ था और जंग उहद में शहीद हो गया है। मैं चाहती हूँ कि उसे अपने पास ले आऊँ, यानी उसको मदीना में दफन किया जाए, ताकि मैं उसकी निकटता से परिचित हो सकूँ। उस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अनुमति इनायत फ़रमाई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा मोटे और भारी वज़न के थे और हज़रत मजज़्ज़र बिन ज़याद दुबले पतले थे लेकिन रिवायतों मेंया लिखा है कि ऊंट दोनों वज़न बराबर रहा। इस पर लोगों ने आश्चर्य किया तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इन दोनों के कर्मों ने उन्हें बराबर कर दिया है।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 160-161 अब्दुल्लाह बिन सलमा, मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

फिर एक सहाबी हज़रत मसूद बन ख़लदा हैं। उनका नाम मसूद बन ख़लदा था और कुछ रिवायतों में मसूद बिन ख़ालिद उल्लेख किया है। वह अंसार के बनू ज़ुरैक कबीला से संबंधित थे। जंग बद्र और उहद में शरीक हुए और कुछ रिवायतों से पता चलता है कि आप घटना बेअर माऊना में शहीद हुए जबकि कुछ अन्य रिवायतों में है कि आप जंग ख़ैबर में शहीद हुए।

(अल्इस्तेयाब फी तमीज़ सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 448 मसूद बन ख़लदा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002), (अलअसाबह फी तमीज़िस्सहाबा जिल्द 6 पृष्ठ 281 मसूद बन ख़लदा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005)

फिर हज़रत मसूद बिन सअद अंसारी हैं। हज़रत मसूद का संबंध अंसार के कबीला बनू ज़रीक था। जंग बद्र और उहद में आप शरीक हुए और कुछ के निकट हज़रत मसूद बिन सअद घटना बेयर मऊना में शहीद हुए जबकि मुहम्मद बिन उमैरा और अबू नईम के निकट अपने जंग ख़ैबर में शहीद हुए।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 369-370 मसूद बिन सअद, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

फिर एक सहाबी हज़रत ज़ैद बिन असलम हैं। यह भी अंसारी हैं। हज़रत ज़ैद बिन असलम का संबंध अंसार के कबीला बनू अजलान से था। यह जंग बद्र और उहद में शामिल हुए और हज़रत अबू बक्र के दौरे खिलाफ़त में तुलैहा बिन ख़ुलैद अलअसदी के ख़िलाफ लड़ते हुए बुज़ाख़ह के दिन शहीद हुए। बुज़ाखह नजद में एक चश्मा है जहां मुसलमानों की इस्लामी हुकूमत के विद्रोही और नबुव्वत के दावादागार तुलैहा बिन अलअसदी से लड़ाई हुई थी।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 246 दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई) (असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 135-136 ज़ैद बिन असलम, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

फिर एक सहाबी हैं अबू अलमुनज़िर यज़ीद बिन आमिर। उनका नाम यज़ीद बिन अमरो भी उल्लेख किया है। उनका संबंध अंसार के कबीला बनू सवाद से था। बैअत उक़बा और जंग बद्र और उहद में शामिल हुए और उनकी औलाद मदीना और बग़दाद में भी थी। (अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 294, यज़ीद बिन आमिर, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई) (अलअसाबा फी तमीज़िस्हहाबा जिल्द 6 पृष्ठ 525 यज़ीद बिन आमिर, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005) उनकी औलाद पर्याप्त फैली।

फिर हज़रत अम्र बिन सअलबा अंसारी सहाबी हैं। उनका संबंध अंसार के कबीला बनू अदि से था। अपने उपनाम से अधिक जाने जाते थे। आप जंग बद्र और उहद में शरीक हुए। हज़रत अम्र बिन सअलबा वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सयालह स्थान पर मिला और यहाँ पर इस्लाम स्वीकार कर लिया और आप ने मेरे सिर पर हाथ फेरा। वज़्ज़ाह बिन सलमा एक सहाबी हैं वह अपने पिता से रिवायत करते हैं कि सौ साल की उम्र में भी हज़रत अम्रो बिन सअलबा के सिर पर जिस जगह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हाथ फेरा था वहाँ बाल सफेद नहीं हुए थे।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 3, पृष्ठ 700 अम्रो बिन सअलबा अंसारी, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई) (अल्इस्तियाब फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 3, पृष्ठ 253 अम्रो बिन सअलबा बिन अंनज्जार, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002)

हज़रत अबू ख़ालिद हारिस बिन क़ैस बिन ख़ालिद बिन मुख़ल्लद एक सहाबी थे। वह अंसार के कबीला बनू ज़ुरैक से संबंधित थे। आप अपने उपनाम से अधिक जाने जाते हैं। आप बैअत उक़बा और जंग बदर सहित सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के साथ जंग यमामह में शामिल हुए और घायल हो गए। घाव चंगा हो गया लेकिन उमर के दूर में फिर घाव फट पड़ा जिससे आपकी मृत्यु हो गई। इसलिए आप जंग यमामह के शहीदों में शामिल किया जाता है।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 5 पृष्ठ 81 अबू ख़ालिद हारिस बिन क़ैस, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई) (अल्इस्तेयाब फी मअरफतिल असाब जिल्द 1 पृष्ठ 363 हारिस बिन क़ैस अज़रकी, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002)

फिर एक सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन सअलबा अलबलवी हैं। यह भी अंसारी हैं। उनका नाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन सअलबा था आप जंग बद्र और उहद में शामिल थे। जंग बद्र में अपने भाई हज़रत बह्हास बिन सअलबा के साथ शामिल हुए।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 85 अब्दुल्लाह बिन सअलबा ालबलवी, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई), (अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 418 अब्दुल्लाह बिन सअलबा मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

फिर हज़रत नह्बाब बिन सअलबा अंसारी हैं। उनका संबंध अंसार के कबीला बिल्ली था। उनके दो भाई हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत यज़ीद थे। उनके भाई हज़रत यज़ीद बैअत अक़बा ऊला और सानिया दोनों में शामिल थे। हज़रत नह्हाब बिन सअलबा अपने भाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन सअलबा के साथ जंग बद्र और उहद में शरीक हुए। हज़रत नह्हाब बिन सअलबा नाम बह्हास बिन सअलबा भी उल्लेख किया है।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द1 पृष्ठ 230 बह्हास बिन सअलब, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई) (अल्इस्तेयाब फी मअरफतिल असाब जिल्द 1 पृष्ठ 267 बषात बन सअलबा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई)

फिर हज़रत मालिक बिन मसूद अंसारी हैं। उनका नाम मालिक बिन मसूद था। उनका संबंध अंसार के कबीला बनू साद से था। आप जंग बद्र और उहद में शरीक हुए।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 255, मालिक बिन मसूद, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

फिर अब्दुल्लाह बिन क़ैस बिन सख़र अंसारी हैं। उनका संबंध अंसार के कबीला बनू सलमा से था। अपने भाई मअबद बिन क़ैस के साथ जंग बद्र और जंग उहद में शामिल हुए थे।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3 पृष्ठ 366 अब्दुल्लाह बिन क़ैस मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत) (अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3, पृष्ठ 437 मअबद बिन क़ैस मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबस अंसारी हैं। उनका संबंध अंसार के कबीला ख़ज़रज की शाखा बनू अदि से था। कुछ ने उनका नाम अब्दुल्लाह बिन उबेस वर्णन किया है। यह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग बद्र और उसके बाद होने वाली सभी जंगों में शामिल हुए।

(अल्इस्तेयाब फी मअरफतिल असाबा जिल्द 3 पृष्ठ 75 अब्दुल्लाह बिन अबस, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002)

फिर हज़रत मउतिब बिन कुशैयर अंसारी हैं। कुछ रिवायतों में आपका नाम मुअतिब बिन बशीर भी उल्लेख किया है। उनका संबंध अंसार के कबीला ओस की शाखा बनू ज़ुबैअ: से था। हज़रत मअतब बिन कुशैयर बैअत अक़बा में शामिल थे। आप जंग बद्र और उहद में शरीक हुए।

(असदुल ग़ाब: फी मअरफतिल सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 432 मअतब बिन कुशैयर, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

हज़रत स्वाद बिन रज़न अंसारी एक सहाबी हैं। उनका नाम स्वाद बिन रज़न था कुछ अधिक रिवायतों में आपका नाम सागर बिन रज़न और स्वाद बिन ज़रीक भी उल्लेख किया है। यह जंग बद्र और उहद में शरीक हुए।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 293 स्वाद बिन रज़न, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

फिर हज़रत मझतब बिन औफ सहाबी थे। हज़रत मअतब बिन औफ का संबन्ध कबीला बनू ख़ुज़ाअ से है। यह बनू मखज़ूम के सहयोगी थे। आप को मुअतब बिन अल-हमरा भी कहा जाता है। आप की कुन्नियत अबू औफ है। हज़रत मुअतब बिन औफ दूसरी हिजरत हब्शा में शामिल थे। जब हज़रत मुअतब बिन औफ मक्का से मदीना हिजरत की तो हज़रत मुबशशरि बिन अब्दुल मुनज़िर के यहाँ ठहरे। मदीना के भाईचारा के साय समय आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअलबा बिन हातिब अंसारी के साथ आप का भाईचारा करवाया था। हज़रत मुअतब बिन औफ जंग बद्र, उहद, ख़ंदक सहित सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। हज़रत मुअतब बिन औफ की मृत्यु 57 हिजरी में 78 साल की आयु में हुई।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 1 पृष्ठ 141, मुअतब बिन औफ, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

फिर हज़रत बुहैर बिन अबी बुहैर हैं। हज़रत बुहैर बिन अबी बुहैर जंग बद्र और उहद में शरीक थे। उनके बारे में बस इतना ही लिखा गया है।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 395 बुहैर बिन अबी बुहैर, दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत 1990 ई)

फिर हज़रत आमिर बिन बुकैर थे। हज़रत आमिर बिन बुकैर का संबंध कबीला बनू साद से था। हज़रत आमिर जंग बद्र में शरीक हुए और आप के साथ आप के भाई हज़रत इयासी बिन बुकैर, हज़रत आकिल बिन बुकैर और हज़रत ख़ालिद बिन बुकैर जंग बद्र में शामिल हुए और यह सब बाद की जंगों में शामिल हुए। इन सब भाइयों ने दारे अरकम में इस्लाम स्वीकार कर लिया था। हज़रत आमिर बिन बुकैर जंग यमामह वाले दिन शहीद हुए।

(अल्इस्तेयाब फी मअरफतिल असाब जिल्द 2 पृष्ठ 788 आमिर बिन बुकैर, उत्तरदायी ालजील बैरूत 1992)

फिर हज़रत अम्रो बिन सुराकह बिन अलमुअतमर हैं। उनका पूरा नाम हज़रत अम्रो बिन सुराकह बिन अलमुअतमर जैसा कि मैंने कहा है। हज़रत उसमान के दौरे खिलाफ़त में उनकी मृत्यु हुई थी। उनकी मां का नाम कदामह पुत्री अब्दुल्लाह बिन उमर था। कुछ के निकट उनकी माँ का नाम आमिना पुत्री अब्दुल्लाह बिन उमेर बिन उहेब था। हज़रत अम्रो बिन सराकह का संबंध कबीला बनू अदि से था और हज़रत अब्दुल्लाह बिन सुराकह आप के भाई थे। हज़रत अम्रो बिन सुराकह अपने भाई हज़रत अब्दुल्लाह के साथ हिजरत कर के मदीना आए तो हज़रत रफाह बिन अब्दुल मुनज़िर अंसारी ने आप को अपने यहाँ ठहराया।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 295, अम्रो बिन सुराक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई), (असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 4 मुख्य 523 अम्रो बिन सुराक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005) आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अम्रो बिन सुराकह की हज़रत साद बिन ज़ैयद के साथ भाईचारा स्थापित किया। (असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 436 साद बिन ज़ैयद बिन मलिक अलअशहली, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत) हज़रत अम्रो बिन सुराकह ने जंग बद्र, उहद, ख़ंदक सहित सभी जंगों में हिस्सा लिया की। हज़रत आमिर बन रबीया रिवायत करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें जंग नख़ला पर भेजा और हमारे साथ हज़रत अम्रो बिन सुराकह भी थे। आपका शरीर दुबला और कद लंबा था। यात्रा के दौरान हज़रत उमर बिन सुराकह पेट पकड़कर बैठ गए, क्योंकि खाने-पीने का वहाँ कुछ नहीं था, भूख की तीव्रता के कारण नहीं चल सकते थे। कहते हैं हम ने एक पत्थर लेकर आप के पेट के साथ कस कर बांध दिया फिर आप हमारे साथ चलने लगे। फिर हम अरब के एक कबीला में पहुंचे तो कबीले वालों ने हमारे खाने की व्यवस्था की। इसके बाद फिर आप चल पड़े। मज़ाक भी था सहाबा में तो वहाँ से खाना खाने के बाद जब चल पड़े तो हज़रत अम्रो बिन सुराकह कहने लगे कि पहले मैं समझता था कि इंसान के दोनों पैर उसके पेट को उठाते हैं लेकिन आज मुझे पता चला है कि वास्तव में पेट पैर को उठाता है। खाली पेट हो तो आदमी चल नहीं सकता। हज़रत उमर ने आप को ख़ैबर में ज़मीन का एक हिस्सा अता फरमाया था। हज़रत अम्रो बिन सुराका की वफात जैसा कि मैंने कहा हज़रत उसमान के दौरे खिलाफ़त में हुई।

(असदु ग़ाबा जिल्द 3, पृष्ठ 723 अम्रो बिन सुराक अलकरशी, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई), (अलअसाबा जिल्द 4 पृष्ठ 523 "अम्रो बिन सुराकह" दारुलकुतुब अल्इमया बैरूत 1995 ई)

फिर हज़रत साबित बिन हज़ाल एक सहाबी हैं। उनका संबंध खज़रज की शाखा बनू अमरो बिन औफ से था। जंग बद्र, उहद, ख़ंदक सहित सभी जंगों में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए। 12 हिजरी को हज़रत अबूबकर के दौरे ख़िलाफत में होने वाली लड़ाई यमामह में शहीद हुए।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 1 पृष्ठ 456 साबित बिन हज़ाल, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत) (अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 283 साबित बिन हज़ाल, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

फिर हज़रत सुबेअ बिन क़ैस हैं। आप अंसारी खज़रजी थे। जंग बद्र और उहद में शामिल हुए। हज़रत सुबेअ रज़ियल्लाहो अन्हो की माँ का नाम ख़दीजा पुत्री अम्र बिन ज़ैयद है। हज़रत सुबैए का एक बेटा था जिसका नाम अब्दुल्लाह था और उसकी माँ कबीला बनू जुदारह से थीं। वह मर गया था। इसके अलावा आप का कोई बच्चा नहीं था। हज़रत उबैअ बिन क़ैस आप के भाई थे। हज़रत सुबेअ बिन क़ैस और हज़रत इबादा बिन क़ैस हज़रत अबु दरदाय के चाचा थे और हज़रत सुबेअ के सगे भाई ज़ैद बिन क़ैस भी थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 275 सुबेअ बिन क़ैस, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

फिर हज़रत ख़ुबाब मौला उतबह बिन गज़ावन थे। हज़रत ख़ुबाब रज़ियल्लाहो अन्हो हज़रत उतबह बिन गज़ावान के स्वतंत्र किे गए ग़ुलाम थे। आपकी कुन्नियत अबू यहया थी। बनू नोफल के सहयोगी थे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हिजरत मदीना के समय आप का भाईचारा हज़रत तमीम मौला ख़िराश बिन अस्समअ: से करवाई थी। हज़रत ख़ुबैब जंग बद्र, उहद, ख़ंदक सहित सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। 19 हिजरी में अपनी मृत्यु मदीना में हुई। उस समय आपकी उम्र पचास साल थी। उनका नमाज जनाज़ा हज़रत उमर ने पढ़ाया।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 73 ख़ुबैब मौला उतबा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई), (असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 151 ख़ुबैब मौला उतब:, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत)

हज़रत सुफियान बिन नसर अंसारी एक सहाबी थे। हज़रत सुफियान का संबंध क़बीला खज़रज के परिवार बनू हुशम से था। उनके पिता के नाम में मतभेद है कुछ ने नसर लिखा है और कुछ ने बिशर वर्णन किया है। जंग बद्र और उहद में यह शरीक हुए।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 274 सुफियान बिन नसर, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

एक रिवायत के अनुसार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सुफियान का भाईचारा हज़रत तुफ़ैल बन हारिस के साथ करवाया था।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 30 तुफ़ैल बिन हारिस, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

फिर एक सहाबी अबू मखशी अत्ताई हैं। यह अपनी कुन्नियत अबू मखशी से ही मशहूर थे। उनका नाम सुवैद बिन मखशी है। अबू मखशी अत्ताई बनू असद के सहयोगी थे। अव्वलीन मुहाजिरों में से थे। जंग बद्र में शामिल हुए।

(अल्इस्तेयाब फी मअरफतिल असाबा जिल्द 4 पृष्ठ 1754 अबू मखशी अत्ताई, दारे अल्जैल बैरूत 1992 ई)

असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 7 पृष्ठ 304 अबू मखशी अत्ताई, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995)

फिर हज़रत वहब बिन अबी सरह एक सहाबी हैं। मूसा बिन अक़बा कहते हैं कि आप अपने भाई अमरो के साथ जंग बद्र में शामिल हुए थे।

हिज़रत हब्शा का वर्णन नहीं मिलता। हशीम बिन आदि ने उनका ज़िक्र हब्शा के मुहाजरीन में क्या है लेकिन बलाज़री ने कहा है कि यह बात साबित नहीं है। केवल बद्र में शरीक हुए थे आप जंग बदर और उहद में शामिल हुए थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 6 पृष्ठ 489 वहब बिन अबी सरह, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005)

फिर हज़रत तमीम मौला बनू गनम अंसारी थे। हज़रत तमीम बनू ग़नम बिन

अस्सिलम के स्वतंत्र किए गए ग़ुलाम थे। आप जंग बद्र और उहद में शरीक हुए।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 253 तमीम मौला बनी गनम बन अस्सिलम, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

हज़रत अबू अलहमराय मौला हज़रत हारिस बन अफरा यह जंग बद्र और उहद में शरीक हुए। जंग बद्र में हज़रत मुआज़, हज़रत औफ और हज़रत मऊज़ और उनके स्वतंत्र किए गए ग़ुलाम अबू अलहमराय के पास एक ऊंट था जिस पर वह बारी बारी सवार होते थे।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 6 पृष्ठ 75 अबू अलहमराय, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत), (किताबुल मगाज़ी लिल वाकदी जिल्द 1 पृष्ठ 38 बद्र अलकिताल, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2004 ई)

फिर हज़रत अबु सबरत बिन अबू रहम थे। अबू सबरत उनका उपनाम था। इस उपनाम ने इतनी प्रसिद्धि पाई कि आपका मूल नाम लोगों को भूल गया। उनकी मां का नाम बर्रह पुत्री अब्दुल मुत्तलिब जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फूफी थीं। इस तरह हज़रत अबु सबरत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फूफी ज़ाद भाई हुए। हज़रत अबु सबरत ने हब्शा की तरफ दोनों बार हिजरत की। दूसरी हिजरत हब्शा में उनकी पत्नी उम्मे कुलसूम पुत्री सुहैल बिन अम्रो भी शामिल थीं। उनके तीन बेटे थे जिनके नाम मुहम्मद, अब्दुल्लाह और साद थे। हज़रत अबु सबरत जब मक्का से मदीना की ओर हिजरत कर आए तो उन्होंने मुन्ज़िर बिन मुहम्मद के पास निवास किया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबु सबरत और सलमा बिन सलामह के बीच भाईचारा स्थापित फ़रमाई। हज़रत अबु सबरत जंग बद्र, उहद, ख़ंदक और बाकी सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हम रकाब रहे। आप आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद मदीना से चले गए और मक्का जाकर आबाद हुए थे। हज़रत अबु सबरत ने हज़रत उस्मान के ज़माना ख़िलाफत में वफात पाई।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 307-308 अबू सबरत बिन अबी रहम, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) (सैरुस्सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 583 हज़रत अबु सबरत बिन अबी रहम, दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

फिर हज़रत साबित बिन अम्रो बिन ज़ैयद हैं। इब्ने इस्हाक़ और ज़हरी जो इतिहास लिखने वाले हैं उन्होंने हज़रत साबित बिन अम्रो का नस्ल को सिलसिला वंश बनू नज्जार से वर्णन किया है और इब्ने मुनदा ने उन के वंश का सिलसिला कबीला बनू अशजअ से क़रार दिया है जो अंसार के सहयोगी थे। जंग बद्र में यह भी शामिल हुए थे और जंग उहद में शहादत पाई।

(असदुल ग़ाब: फी मअरफतिल सहाबा जिल्द 1 पृष्ठ 449 साबित बिन अम्रो बिन ज़ैयद, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत)

फिर हज़रत अबू अलऔर बिन हारिस हैं। हज़रत अबूअल और बिन हैरिस नाम के बारे में मतभेद है। इब्ने इस्हाक कहते हैं कि अबू अल का नाम काब है जबकि इब्ने उम्मारा के निकट उनका नाम हारिस बिन ज़ालिम है। आप के चाचा का नाम कअब था। जो वंश को नहीं जानते उन्होंने अबू अल्और को उनके चाचा कअब के नाम से नामित किया है। इब्ने हिशाम भी यही कहते हैं। हज़रत अबू अलऔर की माता की नाम उम्मे न्यार पुत्री इयास बिन आमिर थीं उनका संबंध अंसार के कबीला खज़रज की शाखा बनी अदि बिन नज्जार से था। जंग बद्र और उहद में यह शरीक हुए।

(अल्इस्तेयाब फी मअरफतिल असाबा जिल्द 4 पृष्ठ 1599 अबू अलऔर बिन हारिस, दार अलजबील बैरूत 1992) (अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 389-390 अबू अल और, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

फिर हज़रत अबस बिन आमिर बिन अदि हैं। इब्ने इस्हाक़ ने आपका नाम अबस वर्णन किया है और मूसा बिन अक़बा ने आप का नाम अबसा वर्णन किया है। उनकी मां का नाम उम्मुल बनीन पुत्री ज़खीर बिन सअलबा था। उनका संबंध अंसार के कबीला ख़ज़रज के परिवार बनू सलमा से था। हज़रत अबस उन सत्तर अंसार सहाबा में शामिल थे जो बैअत उक़बा में उपस्थित थे और आप जंग बद्र और जंग उहद में शरीक हुए।

(तब्काते कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 294, अबस बन आमिर, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई) (असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 3, पृष्ठ 415 अबस बिन आमिर अंसार, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

फिर हज़रत इयास बिन बुकैर हैं, उन्हें इब्न अबी बुकैर भी कहा जाता था। आप कबीला बनू साद बिन लैस से थे जो बनी अदि के सहयोगी थे। हज़रत आकिल, हज़रत आमिर, हज़रत इयास और हज़रत ख़ालिद ने इकट्ठे दारे अरक़म में इस्लाम स्वीकार किया था। हज़रत इयासा और उनके भाइयों हज़रत आकिल और हज़रत ख़ालिद और हज़रत आमिर ने एक साथ हिजरत की और मदीना में रफाह बिन अबदुल मुनज़र के यहाँ निवास किया। उनकी माँ की तरफ से तीन भाई और भी थे यह सब जंग बद्र में शामिल हुए। इब्न यूनुस ने कहा है कि इयासा मिस्र की फत्ह में भी शरीक थे और 34 हिजरी में मृत्यु पाई जबकि एक रिवायत के अनुसार हज़रत इयास ने जंग यमामह में शहादत पाई। उनके भाई हज़रत मुआज़ और हज़रत माऊज़ और आकिल जंग बद्र में जबकि हज़रत ख़ालिद घटना रजीई में और हज़रत आमिर जंग यमामह में शहीद हुए। हज़रत आमिर के बारे में एक रिवायत है कि आप बेअरे मऊना में शहादत पाई। हज़रत इयास बिन बकीर जंग बद्र, जंग उहद, जंग ख़ंदक और बाकी सभी जंगों में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रहे। आप इस्लाम को स्वीकार करने वाले आरम्भ के लोगों में से थे और प्रारंभिक हिजरत करने वालों में से थे। आप मुहम्मद बिन इयासा बिन बुकैर के पिता थे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत इयासा बिन बुकैर और हज़रत हारिस बिन खज़मह के बीच भाईचारा स्थापित फरमाया था। यह शायर भी थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 297-298 आकिल बिन अबी अलबकीर, इयास बिन अबी अलबकीर, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई), (असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 1 पृष्ठ 213 इयास बिन अलबकीर, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई), (अल्असाबा फी तमीज़िस्सहाबा जिल्द 1 पृष्ठ 309-310 इयास बिन अबी अलबकीर, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005), (किताबुल महबर पृष्ठ 399-400 दार नशरुल किताब इस्लामिया लाहौर) (बद्र अलबदोर उर्फ असहाबे बद्र लेखक काज़ी मुहम्मद सुलेमान मंसूरपूरी पृष्ठ 44, इयास बन अलबकीर, मकतबा नज़ीरया लाहौर)

ज़ैद बिन असलम से रिवायत है कि अबू अलबकीर के लड़के यानी यह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस्लल्म हमारी बहन का अमुक व्यक्ति के साथ विवाह कर दिया जाए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बिलाल के बारे में तुम्हारा क्या विचार है। बिलाल इससे बेहतर है इस के बारे में सोचो। वे लोग चले गए। दूसरी बार फिर आए और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और फिर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह पैगंबर हमारी बहन का अमुक व्यक्ति के साथ शादी कर दीजिए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर यही कहा कि बिलाल के बारे में तुम्हारा क्या विचार है। वे सोचने के लिए फिर चले गए। फिर वे लोग तीसरी बार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और फिर यही अर्ज़ किया कि हमारी बहन का अमुक व्यक्ति के साथ शादी कर दीजिए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर यही कहा कि बिलाल के बारे में तुम्हारा क्या विचार है? और फिर कहा कि ऐसे व्यक्ति के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जो जन्नत वालों में है। फिर उन लोगों ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि ठीक है और बिलाल से अपनी बहन का विवाह कर दिया।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 179 बिलाल बन रबीअह, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

तो हज़रत बिलाल का यह स्थान था। और कैसे रिश्ते तय होते थे उस समय। ठीक है एक दो बार इनकार किया लेकिन तीसरी बार फिर उन्हें जो आदेश हुआ वह मान लिया। बहरहाल प्रत्येक का अपना अपना स्थान था। कुछ लोग पहली बार ही मान लेते थे कि ठीक है जो आप ने फरमाया कुछ सोचने लग जाते थे लेकिन बहरहाल हज़रत बिलाल के स्थान का भी पता लगता है।

फिर एक सहाबी हज़रत मालिक बन नुमीलह हैं। उनकी मां का नाम नुमीलह था। उन्हें इब्ने नुमेलहा कहा जाता था। उनका संबंध कबीला मुज़य्यना से था जो कबीला ओस की शाखा बनी मुआविया के सहयोगी थे। जंग बद्र और जंग उहद में शरीक हुए और जंग उहद में उनकी शहादत हुई।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 358 मालिक इब्ने नुमीला, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) (असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 258 मालिक बन नुमीला, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

फिर हज़रत उनैस बिन क़तादा बिन राबिया हैं। उनका संबंध अंसार के कबीला औस से था। बद्र में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक थे। जंगे उहद में शहीद हुए। अबुल हकम बिन अख़नस बिन शरीक ने उन्हें शहीद किया था।

हज़रत ख़नसाय पुत्री ख़िज़ाम हज़रत उनैस बिन क़तादा के निकाह में थीं। जब वह उहद के दिन शहीद हुए तो हज़रत ख़नसाय के पिता ने उनका निकाह कबीला मज़ीना के एक व्यक्ति से कर दिया लेकिन यह उसे नापसंद करती थीं। फिर यह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आईं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़नसाय का निकाह समाप्त कर दिया। पिता ने निकाह किया था। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा अगर लड़की को यह नापसंद है तो निकाह समाप्त कर दिया। इसके बाद हज़रत ख़नसाय ने हज़रत अबू लबाबह से शादी कर ली और इस शादी से फिर हज़रत साइब बिन अबी लबाबह का जन्म हुआ।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 1 पृष्ठ 187 उनैस बिन क़तादा बिन राबिया, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई), (अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 354 उनैस बिन क़तादा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

यह है उदाहरण महिला की स्वतंत्रता का। रिश्तों के मामले में कुछ लोग जो अपनी लड़कियों पर ज़बरदस्ती करते हैं उन्हें सोचना चाहिए।

फिर हज़रत हारिस बन अरफज़ा एक सहाबी थे। उनका संबंध कबीला बनू ग़नम था। जंग बद्र और उहद में यह भी शामिल हुए।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 253 हारिस बन अरफज, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

फिर हज़रत राफे बिन उनजुदा अंसारी थे। हज़रत राफे के पिता का नाम अब्दुल हारिस था, उनजुदा आप की माँ का नाम था। हज़रत राफे ने अपनी मां के अपनाम से प्रसिद्धि पाई, पिता के बजाय मां के नाम से मशहूर हुए। उनका संबंध कबीला बनू उमय्या बिन ज़ैद बिन मलिक से था। जंग बद्र, उहद और ख़ंदक में यह शरीक हुए।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 45 राफे बन उनजुदह, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई),(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 369 राफे बन उनजुदह, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005 ई)

एक रिवायत के अनुसार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत राफे बन उनजुदा और हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाह तआला अन्हो बिन हारिस के बीच भाईचारा स्थापित किया था।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 30 उल्लेख अलहुसैन बिन हारिस, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी 1996 ई)

फिर हज़रत ख़लैद बिन क़ैस एक सहाबी थे। उनकी मां का नाम इदामा पुत्री अलकन था कि बनू सलमा से थीं। ख़ुलैद बिन क़ैस के अलावा आपका नाम ख़लीद बिन क़ैस, ख़ालिद बिन क़ैस और ख़ालिदा बिन क़ैस भी मिलता। यह जंग बद्र और उहद में शरीक थे। उनके सगे भाई जिनका नाम ख़ल्लाद था। कुछ इतिहासकारों के निकट यह भी बद्री सहाबा में शामिल थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 292 ख़ुलैद बिन क़ैस, दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी 1996 ई)

फिर हज़रत सकफ बिन अम्रो हैं। हज़रत सकफ बिन अम्रो के कबीला के बारे में अलग राय हैं। कुछ ने बनू असलम, कुछ के निकट बनू असद था, जबकि कुछ आप का संबंध कबीला बनू सुलम से बताते हैं। आप बनू असद के सहयोगी थे लेकिन कुछ के निकट आप बनू अब्दुल शम्स के सहयोगी थे। यह अपने दो भाइयों के साथ बद्र में शरीक हुए जिनके नाम हज़रत मालिक बिन अम्रो और मुदलाज बिन अम्रो है। हज़रत सकफ बिन अम्रो पहले मुहाजिरों में से थे। जंग बद्र, उहद, ख़ंदक , हुदैबिया और ख़ैबर में शामिल हुए और जंग ख़ैबर में आप की शहादत हुई।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 1 पृष्ठ 476 सकफ बिन अम्रो, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत) (असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 1 पृष्ठ 525 सकाफ, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995) (अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 72 सकफ बिन अम्रो, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

फिर हज़रत सबरत बिन फ़ातिक थे। यह ख़ुरैम बिन फ़ातिक के भाई थे और परिवार बनू असद थे। उनके पिता का नाम फ़ातिक बिन अलअख़रम था। हज़रत सबरत का नाम समरह बिन फ़ातिक भी मिलता है। अयमान बिन ख़ुरैम बताते हैं कि मेरे पिता और चाचा दोनों जंग बद्र में शामिल हुए और उन्होंने मुझसे वादा लिया था कि मैं किसी मुसलमान से लड़ाई नहीं करूंगा, जंग नहीं करूँगा। अब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने कहा है कि सबरत बिन फ़ातिक वही हैं जिन्होंने दमिश्क को मुसलमानों में विभाजित था। इन की गिनती सीरिया वालों में होती है। यह बताते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मीज़ान रहमान ख़ुदा के हाथ में है। वह कुछ क़ौमों को बढ़ाता है और कुछ को गिरा देता है। (अर्थात उन के अपने कर्मों को कारण से)। हज़रत सबरत बिन फ़ातिक का गुजर हज़रत अबूदरदाय के पास से हुआ तो उन्होंने कहा सबरत के साथ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नूर है। अब्दुर रहमान बिन अयाज़ बताते हैं कि मैंने एक व्यक्ति को देखा जिसने हज़रत सबरत को अपशब्द कहे तो उन्होंने इसका जवाब देने से बचने के लिए ग़ुस्सा पी लिया। जवाब नहीं दिया, क्रोध के बावजूद कोई जवाब नहीं दिया, चुप रहे और क्रोध को दबाने के कारण रोने लगे। इतना तीव्र उन्हें ग़ुस्सा था, इतना बुरा भला कहा गया उन्हें कि क्रोध दबाया जिस के कारण आंखों से पानी आ गया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या ही अच्छा आदमी है सबरत अगर वे अपने लंबे बाल कुछ छोटे करवा ले (उनके लंबे बाल थे) और अपनी तह बंद थोड़ा ऊपर उठा ले। जब आप तक यह बात पहुंची तो उन्होंने तुरंत ऐसा ही किया। वह बयान करते थे कि मुझे इस बात की इच्छा है कि हर दिन किसी मुशरिक से मेरा सामना हो जिसने कवच पहन रखी हो। अगर वह मुझे शहीद कर तो ठीक और अगर मैं इसे कत्ल कर डालूं तो उस जैसा मेरे सामने आ जाए। कुछ के निकट यह बद्र में शामिल नहीं थे लेकिन इमाम बुखारी आदि ने आप को और आपके भाई को बद्री सहाबा में शामिल किया है।

(असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 190 सबरत बिन फ़ातिक, दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई) (असदुल ग़ाबह फी मअरफतिस्सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 25-26, 152 सबरत, समरह बिन फ़ातिक, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2005 ई) (अल्इस्तेयाब फी मअरफतिल असाब जिल्द 2 पृष्ठ 29 ख़रीम बिन फ़ातिक अल्असदी, दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई)

ये सहाबियों के उल्लेख थे।

अब जुम्अ: के बाद दो जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जिनमें पहला जनाज़ा आदरणीय उंगको अदनान इस्माईल (Ungku Adnan Ismail) साहिब सदर जमाअत मलेशिया का है, 8 अक्टूबर को 74 साल की उम्र में उनकी मृत्यु हुई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना लिल्लाह राजेऊन। उनके पिता प्रारंभिक अहमदियों में से थे जिन्होंने 1956 ई में सिंगापुर के मुबल्लिग़ आदरणीय मौलाना मुहम्मद

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

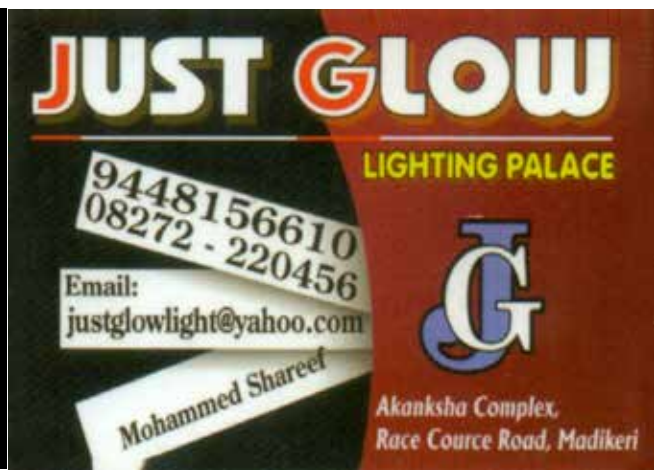

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

सादिक़ साहिब और सिंगापुर जमाअत के पहले सदर मुहम्मद सालकीन साहिब के द्वारा बैअत की थी। उनके पिता मलेशिया की एक राज्य जूहोर (Johor) के मुफ्ती थे और ननिहाल की तरफ से इस राज्य के राजा के रिश्तेदार थे। अहमदी होने के बाद उन्हें सरकार के एक विभाग में स्थानांतरण कर दिया गया था। अदनान साहिब अगस्त 1944 ई में पैदा हुए। 1968 ई में उन्होंने सिंगापुर विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में बी.ए ऑनर्स किया। फिर 1969 ई में, सरकार के प्रशासनिक और राजनयिक क्षेत्रों में काम करना शुरू कर दिया। 1969 ई से 1981 ई तक प्रधान मंत्री के रिसर्च क्षेत्र में काम किया। इस दौरान, सिंगापुर, बीजिंग और बैंकॉक में मलेशियाई दूतावासों में उनकी नियुक्ति हुई थी। फिर उन की तरक्की हुई और प्रधान मंत्री की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में एक विभागीय प्रमुख दिया गया। यहां उन्होंने 1984 ई से 1992 ई तक काम किया। 1992 ई से 1997 ई तक, उन्होंने प्रधान मंत्री विभाग के बाहर अन्य सरकारी कार्यालयों में भी काम किया। 1996 में दिल का बाई पास अपरेशन हुआ, और फिर 1997ई में प्रधान मंत्री के शोध विभाग में काम करना शुरू कर दिया। 1999 ई में वहां से रिटायर्ड हुए। आपने 1956 ई में अपने माता-पिता के साथ बैअत की थी, लेकिन 1981 ई में बैंकाक पोस्टिंग से वापसी पर एक सच्ची, सक्रिय अहमदी बन गए और जमाअत के साथ आप के संबंधों में वृद्धि हुई। 1986 ई में, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने उन्हें मलेशिया का पहला सदर नियुक्त किया, उन के सदारत के समय में जमाअत में बहुत से तब्दीलियां और तरक्कियां हईं। बेयतुस्ससाल और बेयतुर्रहमान की इमारतों का निर्माण उनकी अवधि के दौरान हुआ था। इंडोनेशिया से मुबल्लिग़ों को मलेशिया में लाने उन्हें स्थापित करने में उन्होंने बहुत मदद की। इसी प्रकार, मलेशिया से रब्बाह और कदियान में छात्रों को भिजवाया। पिछले दो सालों से, उनका स्वास्थ्य बहुत ख़राब था। कई बार अस्पताल में दाख़िल किया। फिर उन्होंने मुझे लिखा कि मैं मैं ताहिर हार्ट में भी जाना चाहता हूं। फिर ताहिर हार्ट इस साल मई में चले गए, वहां स्वास्थ्य में सुधार हुआ, लेकिन फिर से स्वास्थ्य ख़राब हो गया और फिर अस्पताल में प्रवेश किया। यह अल्लाह के फज़्ल से मूसी थे। पीछे रहने वालों में एक बेटी और दो बेटे शामिल हैं।

आदरणीय उंगको अदनान इस्माईल (Ungku Adnan Ismail) साहिब जोहोर राज्य के रॉयल फैमिली के होने के बावजूद अबहुत विनम्र थे। अपनी जमाअत की और राजनीतिक ज़िम्मेदारी की अत्यधिक सराहना की गई। केंद्र को भिजवाए जाने वाली रिपोर्टों में भी बारीक पहलुओं का ध्यान रखते। और अक्सर जमाअत के मामलों को करने के लिए रात तक दफतर में में काम करती है। वरिष्ठ अधिकारियों, काम करने वालों, जमाअत के लोगों और विशेष कर के मुबल्लिग़ों के साथ उनका बहुत अच्छा व्यवहार था। बच्चों के बारे में एक विशेष ध्यान रखते थे। यही कारण है कि जमाअत के बच्चों और उनकी शिक्षा का ध्यान रखते थे और यही कहा करते थे कि यह जमाअत का भविष्य हैं। उनकी पत्नी का कहना है कि आप हमेशा जमाअत के बच्चों के लिए उच्च शिक्षा पर ज़ोर देते हैं और हमेशा जमाअत की प्रगति के बारे में सोचते हैं।

मृत्यु के दिन अस्पताल में कोई एम्बुलेंस नहीं था, मृतक को मस्जिद में लाने के लिए कोई परिवहन नहीं था। इसलिए जमाअत के सदस्यों ने एक चीनी सेवा करने वाले कोआन ची साहिब से संपर्क किया जो अपनी गाड़ी एम्बुलेंस को वाहन के रूप में चलाने के लिए इस्तेमाल करता था और लोगों को मुर्दों को स्थानांतरित करने में मदद करता था। चीनी आदमी ने अपने फेसबुक में उल्लेख किया कि उन्होंने इस मुर्दा को ले जाने में उन्हें असाधारण अनुभव हुआ है। उन्होंने लिखा कि जब उन्होंने वैन ड्राइव करना शुरू किया, तो यातायात में हमेशा भारी ट्रैफिक जाम रहता था, अचानक ट्रैफिक समाप्त हो गया था और लगभग एक घंटा की यात्रा आमतौर पर की जाती थी, लेकिन मस्जिद तक पहुंचने में केवल 25 मिनट लगे। फिर, मस्जिद पहुंचने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि किसी धर्म के सेवक की लाश थी।

वकीलुत्तबशीर रब्वा मंसूर ख़ान साहिब ने लिखा है कि अदनान इस्माइल साहिब ने दीर्घकालिक मलेशिया के सदर जमाअत के रूप में कार्य किया है। अपने जमाअत के लोगों के लिए पिता की तरह थे। कहते हैं कि मलेशिया की यात्रा के दौरान, मुझे जमाअत की जानकारी पर उनके साथ बातचीत करने का अवसर मिला, मैंने उन्हें एक हिक्मत से काम लेने वाला आदमी पाया जिसने अविश्वसनीय परिस्थितियों में कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया। बहुत जटिल और कठिन मामलों में उन की राय पर भरोसा किया जाता था। अल्लाह तआला उन के स्तर उंचा फरमाए, उन की औलाद को भी नेक कर्मों पर चलने की तौफीक़ प्रदान करे और जमाअत के हमेशा मज़बूत सम्बन्ध रखने वाले हों।

दूसरा नमाज़ जनाज़ा हमीदा बेगम साहिब, जो चौधरी ख़लील अहमद साहिब की पत्नी थीं। 5 अक्टूबर को, 84 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। कादियान के नज़दीक गांव भैनी बांगर में अहमदी परिवार में पैदा हुईं थी। नमाज़ों की पाबन्द, तहज्जुद की नमाज़ अदा करने वालीं, दुनियावी शिक्षा तो कोई नहीं थी लेकिन कुरआन से आपको बहुत प्यार और मुहब्बत थी। कुरआन को दिन में कई बार पढ़ती थीं। नियमित रूप से रमज़ान में, वह कुरआन को सुनने के शौक़ में नमाज़ तरावीह में जाया करती थीं। जब रब्वा में औरतें जुम्अ: में जाया करतीं थीं, तो उस समय उन की कोशिश होती थी कि मस्जिद अक्सा रबवा में जुम्अ: में पहुचने वाली सब से पहली औरत हों इसलिए बहुत पहले जुम्अ: में चली जाया करती थीं। रहन सहन में बहुत सादगी थी। जो पैसे इकट्ठा करतीं इसे विभिन्न तहरीकों और मस्जिदों के निर्माण में पेश कर तके बहुत ख़ुस होतीं और ख़ुदा का शुक्रिया अदा करने में प्रसन्न होतीं। कई बच्चियों के विवाह करवाए। ग़रीब बच्चियों को दहेज भी ख़ुद ही तैय्यार करवा देतीं। कई बार, उन्होंने अपने गहने चन्दे या ग़रीबों को दे दिए । नियमित रूप से गरीबों के पास जाना हमेशा उन की सबसे बड़ी ख़ुशी थी। सदका तथा ख़ैरात बहुत खुले हाथों से करतीं। किसी को घर से खाली हाथ न जाने देतीं।

अल्लाह की कृपा सी वसीयत की हुई थी। पीछे रहने वालों में, दो बेटियां और आठ बेटे यादगार छोड़ें हैं। लतीफ अहमद साहिब रिटायर्ड मुरब्बी सिलसिलाऔर उन के बड़े बेटे डॉ मुजफ्फर चौधरी साहिब को भी वक्फ आरज़ी की तौफीक मिलती रहती यहीं यू के में स्कैनथोरपे में रहते हैं। उनके बेटे बिशारत नवीद साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं और आजकल रीयूनियन द्वीप में सेवा कर रहे हैं उनके दामाद हाफिज़ अब्दुल अलीम साहिब भी रब्वा में मुकब्बी हैं। नवासे भी एक मुरब्बी हैं दो नवासे हाफिज़ कुरआन हैं अक पौटा यहां यूं के में जामिया में पढ़ रहा है। आम तौर पर, मैं उन मुरब्बियों के माता-पिता का नमाज जनाज़ा मैं पढ़ाता हूं जो मुरब्बी मैदान तब्लीग़ में हों और अपने माता-पिता के नमाज़ जनाज़ा में शामिल नहीं हो सकते हैं। बिशरत नवीद साहिब भी कर्म क्षेत्र में थे और उनकी वफात पर नहीं पहुंच सके थे, इसलिए उनकी मां का नमाज जनाज़ा ग़ायब आज मैंने पढ़ाने के लिए रखा है।

बिशारत नवीद साहिब लिखते हैं कि जामिया अहमदिया पूर्ण करने के बाद जब मैं कर्म क्षेत्र में गया तो एक बार घर वापस आया तो सुबह की नमाज़ के लिए मस्जिद नहीं जा सका। इस पर मुझे कहने लगी कि बेटा तुम जब जहां अपनी पोस्टिंग में होते हों तो तुम्हें लोग देख रहे होते हैं और शायद तुम लोगों की वजह से मस्जिद में चले जाते हो लेकिन याद रखो यहाँ तुम्हें ख़ुदा देख रहा है इसलिए हमेशा नमाज़ों की तरफ ध्यान दो और यह देखते रहो कि तुम्हें ख़ुदा देख रहा है

कहते हैं जब मैं जामिया में पढ़ रहा था, तो मेरे पिता जी की अचानक वफात हो गई। बड़े भाई विदेश जो चुके थे। बड़ी हिम्मत उन्होंने घर को संभाला। एक दिन मैंने उनसे मज़ाक से कह दिया कहा कि मुझे जमाअत को यह बताना चाहिए कि मेरे माता अकेली हैं तो मैं उनकी सेवा करना चाहता हूं, इसलिए मुझे कहीं दूर न भेजा जाए? इस पर बहुत गंभीर हो गईं और बहुत सख्ती से कहा कि जहां जमाअत भेजे वहां जाना है। यह तो संभव नहीं है कि जिस को मैंने वक्फ किया है उस को मैं अपने पास रखूं और जो दुनिया कमाने वाले हैं उन्हें कहूं कि जाओ दुनिया कमाओ। अगर मुझे किसी को अपने पास रखना है, तो मैं तुम्हें नहीं दुनिया कमाने वालों को बुलाऊंगी। यह उनकी भावना थी। फिर वह लिखते हैं कि 2013 ई में, जब वह आख़री बार पाकिस्तान गए, तो मैंने उनसे कहा कि मैं अपनी पत्नी को आप के पास छोड़ दूं? हालांकि वह बहुत कमज़ोर थीं, बिस्तर से उठना भी मुश्किल था, लेकिन फिर भी उन्होंने इस बात की अनुमति नहीं दी। कहने लगीं नहीं बीवी बच्चों को अपने पास रखो उन्हें अपने पति के साथ ही रहना चाहिए। यह है सबक उन बुज़ुर्गों की जो आजकल के लोगों के लिए भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। अल्लाह तआला उन के स्तर बढ़ाए है और उन की नस्लों को भी वफा के साथ धर्म पर स्थापित रहने की तौफीक़ प्रदान करे ।

☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

क्रोरंज़ है। हमारी चन्दा 80 करोंज़ प्रति व्यक्ति है। चन्दा इज्तिमा 16 हज़ार क्रोरंज़ है। पिछले साल, इज्तमिा पर 20,000 क्रोरंज़ खर्च हुआ था।

* मुहतमिम तजनीद ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की और कहा कि ख़ुद्दाम की तजनीद 246 है।

* मुहतमिम इशअत ने बताया कि हम ने ख़ुद्दान की पत्रिका पुस्तक प्रकाशित की है। यह स्वीडिश में है। उसका नाम "चमकता सितारा है। 1995 ई में, हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने इस की मंज़ूरी दे दी थी। अब इस पत्रिका के इस साल दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि 21 साल बाद, एक और आंकड़ा निकलेगा। इसके अनुसार, तीसरा आंकड़ा 2037 में होगा। कम से कम साल में दो तीन संख्या तो निकाला करें।

हुज़ूर अनवर ने पत्रिका की सामग्री के बारे में पूछा कि कौन तैय्यार करता है कौन इस का ज़िम्मेदार है और इसे मंज़ूर करता है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि नियमित प्रकाशन इशाअत कमेटी से इस की सामग्री की स्वीकृति होनी चाहिए या जो मुरब्बी साहिब चेक करते हैं उनके द्वारा लिखित होनी चाहिए कि मैंने चेक कर लिया है, पढ़ लिया है और यह ठीक है। यह सामग्री अच्छी है और भाषा आदि के मामले में भी ठीक है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि मुबल्लिग़ सिलसिला स्टॉक होम काशिफ साहिब को दिखा दिया करें और उनसे मंजूरी लिया करें। वह आपको लिखेंगे कि मैंने पढ़ लिया है और अब प्रकाशित किया जा सकता है। इसी तरह मुझे भी लिखकर भिजवाएंगे कि पत्रिका में यह यह सामग्री है और मैं पढ़ लिया है और इसके अंदर जो भी सामग्री है सब ठीक है और प्रकाशन के योग्य है। नियमित जांच के बाद, पत्रिका प्रकाशित हो।

* मुहतमिम सेहत जिस्मानी ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि ख़ुद्दाम सप्ताह में एक बार फुटबॉल खेलते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने उनसे फरमाया अब तो माल्मो में एक स्पोर्ट्स हॉल भी बन गया है। वहाँ खेलों के कार्यक्रम बनाएं। यहां गोथन बर्ग में भी देखें कि ख़ुद्दाम आ जाया करें और कोई खेल इत्यादि खेला करें।

* मुहतमिम वकारे अमल ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि मस्जिद में वकारे अमल करते हैं इसी प्रकार नए साल की शुरुआत में, सड़कों की सफाई आदि करते हैं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अब तो आप माल्मो में मस्जिद बन गई है। स्टॉकहोम में भी जमाअत का केंद्र है। कोई इस प्रकार के वकारे अमल का नौजवानों वाला प्रोग्राम बनाएं जो नज़र आना चाहिए उसको प्रस्तुत करें ताकि आप की तब्लीग़ के लिए मार्ग खोल सकें।

* एकाउंटेंट ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए कहा नियमित हिसाब होता है। पहली तिमाही का हिसाब पूरा कर लिया है।

* मुहतमिम अमूमी ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हु कहा कि, जुम्ओं, जल्सों मुलाकातों और समारोहों पर नियमित व्यवस्था आयोजित की जाती है। इसी तरह कैमरे भी स्थापित हैं। रात की नियमित निगरानी रखी जाती है। इस समय भी ख़ुद्दाम के पांच ग्रूप विभिन्न स्थानों पर निगरानी रखे हुए हैं।

* मुहतमिम अत्फाल ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर फरमाया कि स्वीडन में अत्फाल की संख्या 58 है। जिनमें से 49 सक्रिय हैं और नियमित तरबियत के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, चन्दा देते हैं, नमाज़ आती है और हर सप्ताह कक्षा में आते हैं नाज़िम अत्फाल कलास लेते हैं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आपके तरबियती कक्षा नियमित रूप से होनी चाहिए और इन कक्षाओं में अत्फाल के निसाब का अनुसरण करें। अत्फाल की कक्षाओं में मुरबिय्यों से भी लाभ उठाएं।

* मुहतमिम तब्लीग़ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने के पूछने पर फरमाया , पिछले नवंबर से लेकर अब तक ख़ुद्दामुल अहमदिया के माध्यम से कोई बैअत नहीं हुई है। और पिछले तीन वर्षों के बारे में पता नहीं कि ख़ुद्दामुल अहमदिया के माध्यम के कितनी बैअतें हुई हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क करें और केवल पलानिंग न करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि अब यहां पर कई रिफ्यूजीज़ आए हैं और विभिन्न कैम्पों में हैं। उन के साथ संपर्कों के लिए कैम्पों में जाना पड़ेगा। इन कैम्पों में जो अहमदी आए हैं इन के साथ भी सम्पर्क करना होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मुहतमिम तालीम को हिदायत देते हुए फरमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की जो किताबें स्वीडिश भाषा में अनुवादित हो गई हैं उसे ख़ुद्दाम के निसाब में रखें। आमला में के कई सदस्य अच्छी तरह से उर्दू नहीं पढ़ सकते तो यह उर्दू की किताब किस प्रकार से पढ़ सकेंगे। इस लिए इस प्रकार की पुस्तकें रखें जिस का अनुवाद हो गया हो। ताकि सभी सदस्य इसका अध्ययन कर सकें।

* मुहतमिम तरबियत ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की और कहा कि हर सप्ताह हमारी तरबियत कक्षा गोथन बर्ग में होती है। बारह से पंद्रह ख़ुद्दाम शामिल होते हैं। स्टॉकहोम की कक्षा में भी 8 से 10 ख़ुद्दाम शामिल होते हैं। माल्मो में भी कक्षा का आयोजन हो रहा है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि अपनी अपनी तरबियत कक्षाओं में ख़ुद्दाम की हाज़री बढ़ाऐं। ज़ोर दें और पीछे पड़ें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आप की मज्लिसे शूरा के जो फैसलें हैं उन की समीक्षा करते रहें।

हुज़ूर अनवर की सेवा में यह रिपोर्ट पेश की गई कि 246 ख़ुद्दाम में से 222 सक्रिय हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि जो सक्रिय हैं, उन में से नियमित एम.टी.ए पर कितने ख़ुत्बा जुम्अ: सुनते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि क्या आपने व्यक्तिगत समीक्षा रिपोर्ट फॉर्म बनाया हुआ है? अपने ख़ुद्दाम को एम.टी.ए से जोड़ दें। यह भी देखें कि पांच बार नमाज़ पढ़ने वाले कितने ख़ुद्दाम हैं जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने वाले कितने ख़ुद्दाम हैं मस्जिदों में आकर नमाज़ पढ़ने वाले कितने ख़ुद्दाम हैं। अपने केंद्रों में जाने वाले कितने हैं? इस बात पर ध्यान केंद्रित करें।

कुरआन करीम में ईमान लाने के बाद नमाज़ अदा करने का आदेश हैं। यदि नमाज़ पढ़ेगे, कुरआन पढ़ेंगे, तो तब ही अच्छी तरह से प्रशिक्षित होंगे। और जब तरबियत अच्छा होती है तो सैक्रेटरी माल का काम आसान हो जाएगा और यह भी अपने आप चन्दा देंगे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आप अपने ख़ुद्दाम को एम,टी,ए से जोड़ दें। हम वर्ष में एम,टी,ए पर एक मिलयन पाउंड खर्च करते हैं। ऐसा इसलिए है कि आप लोग एम,टी,ए से संलग्न हों और आपकी तरबियत के साधन हों।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि कितने हैं जो नियमित सप्ताह में एम,टी,ए के चार दिन या तीन दिन या दो दिन देखते हैं। यदि ध्यान दिलाएं तो ख़ुद्दाम को ध्यान होगा। हुज़ूर अनवर ने मुहतमिम तरबियत को फरमाया कि यहां काम कर के दिखाएं।

मुहतमिम तहरीक जदीद को हुज़ूर अनवर ने फरमाया जो ख़ुद्दाम चन्दा तहरीक जदीद में हिस्सा लेते हैं उन का आप के पास रिकॉर्ड होना चाहिए।

* मुहतमिम ख़िदमते ख़लक ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर अपनी रिपोर्ट में कहा कि हम दान के लिए धन इकट्ठा करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि "ओल्ड पीपुल्स होम पर जाया करें। उन के विज़ट के प्रोग्राम बनाएं। हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या यहां एशियाई का ख़ून लेते हैं? जिस पर हुज़ूर अनवर की सेवा में रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी वह यह थी कि स्वीडन में तीन साल रहने के बाद रक्त लेते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि रक्तदान कार्यक्रम भी जारी रखें। अपने सारे साल के कार्यक्रम बनाएं और अनुसरण करें। जब तक आप के सामने निर्धारित लक्ष्य न हो तब तक आप अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकते।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि, तरबियत का विभाग एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। तरबियत के लिए बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि बारह वर्ष की उम्र में अत्फाल बहुत सक्रिय होते हैं। 14 ,15 वर्ष की आयु में सुस्त हो जाते हैं। फिर जब ख़ुद्दामुल अहमदिया में शामिल होते हैं तो उन को हवा लग जाती है

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि मुहतमीन यदि सक्रिय हो जाएं तो ये मज्लिसों से अपने अपने विभाग की रिपोर्टें प्राप्त करें और उन के पीछे पड़ जाऐं। मुहतममीन सदर साहिब के माध्यम से ख़त लिखवाएं। उन्हें समझाएं और ताकीद करें कि अपनी रिपोर्ट भिजवाया करें। जो नाज़मीन खाली फार्म भिजवा देते हैं और कोई काम नहीं करते उन को सदर साहिब की तरफ से लिखें कि आप का ख़ाली फार्म मिल गया? आप ने कोई काम नहीं किया। उम्मीद है आप को अपना ख़ाली फार्म देख कर शर्म आ जाऐगी तो इस प्रकार वे अगले महीने काम करेंगे।

* हुज़ूर अनवर ने पत्रिका के हवाले से निर्देश देते हुए फरमाया कि अपनी पत्रिका वेबसाइट में डाल दें और घोषणा कि हम हर साल तिमाही पत्रिका निकालेंगे तो उसके लिए अपने लेख लिखकर भेजें।

मज्लिसों में नाज़िम इशाअत हैं उस को कहें कि अपने ख़ुद्दाम को सक्रिय करें। इसी तरह, छात्रों के छात्र संघ को यह कहना चाहिए कि वे भी सक्रिय हों।

* हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि वर्तमान मुद्दों पर लेख आ सकते हैं। उन्हें बताएं कि ये वर्तमान मुद्दे हैं। इन का क्या जवाब हो सकता है? आप कुछ मुद्दों और समस्याओं का उत्तर खुल कर नहीं दे सकते लेकिन सामान्य रूप से उत्तर दिया जा सकता है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अपनी पत्रिका का आरम्भ कुरआन की एक आयत और इस का अनुवाद और इस की संक्षिप्त व्याख्या के साथ करें। फिर कुछ हदीस लें, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का उद्धरण उद्धृत करें। ख़ुत्बों से से अलग-अलग बातें लें, तरबियती पहलुओं पर लेख और निबन्ध लें। यदि आप ख़ुद्दाम में रुचि पैदा करेंगे तो ख़ुद्दाम फिर इस में लेख भी लिखेंगे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि रसाला रियूयू आफ रिलीजन्स के लिए भी लेख नहीं आते थे। मैंने इन का बोर्ड बदल दिया। उन्हें व्यवस्थित किया और वहां एक मुरब्बी सिलसिला को नियुक्त किया। अब वहां इतनी सारी सामग्री है कि चार चार पांच पांच महीने के लिए रखा हुआ है, और युवा लेख लिखते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि पत्रिका रियूयू आफ रिलीजन्स पढ़ा करें। इसमें आपकी रूचि के लेख भी शामिल हैं। अब स्टॉकहोम के पते भी इस में शामिल हो जाएंगे।

चन्दा की मुश्किलों का वर्णन करते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया माली कुर्बानी अल्लाह तआला का आदेश है चन्दा का अदा करना अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए है चन्दा हरगिज़ कोई टेक्स नहीं है ।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आप अपने इज्तिमा में सवाल तथा जवाब का एक सेशन रखा करें। मुबल्लिग़ काशिफ महमूद विर्क साहिब इन सवालों के जवाब देंगे। ख़ुद्दाम को कहें कि चन्दा के बारे में उन के दिमागों में जो सवाल हैं वे पेश करें और पूछें इस तरह उन को बताएं कि चन्दा क्यों ज़रूरी है और इस का क्या महत्व है विभिन्न चन्दे क्यों हैं इस से ख़ुद्दाम की तसल्ली होगी और उन में चन्दे अदा करने का शौर होगा।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि यू. के में ख़ुद्दाम के इज्तिमा के अवसर पर इस तरह का एक सवाल तथा जवाब का सेशन रखा गया था। जामिया अहमदिया यू.के के वरिष्ठ छात्र थे जिन्होंने ख़ुद्दाम के सवालों के जवाब दिए और चन्दों का महत्व बताया। जो ख़ुद्दाम चंदा देने में सुस्त थे उनकी हर लिहाज से तसल्ली हुई और कुछ ख़ुद्दाम ख़ुद सैक्रेटरी माल के पास जाकर अपना चंदा अदा किया और नाज़िम माल के पास गए कि हमारा चंदा ले लो।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अब तरीके आप ने निकालने हैं। मैंने आपको एक तरीका बता दिया।

* मुहतमिम अत्फाल ने मार्गदर्शन चाहा कि जो पूरी फैमली ही पीछे हटी हुई है उस के अत्फाल को किस प्रकार निकट लाएं?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया, अपने सदर ख़ुद्दाम के माध्यम से अमीर साहिब को ख़त लिखें। मुबल्लिग़ इन्चार्ज को लिखें। इसी प्रकार, माता-पिता को भी अपने तरीके से समझा सकते हैं और उन्हें बताएं कि अगर आप को अधिकारियों के साथ शिक्वे हैं तो क्यों अपने बच्चों को, अपनी नस्लों को बर्बाद कर रहे हैं?

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि हर अधिकारी का हर स्तर पर काम है कि वे इस प्रकार के लोगों को क़रीब लाने की कोशिश करें। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आप यह ध्यान में रखें कि किसी को दूर करना आसान है और इसे करीब लाना बहुत मुश्किल काम है।

* जैसा कि एक युवा ख़ुद्दाम का वर्णन हुआ कि हुज़ूर अनवर की सेवा में यह रिपोर्ट हुई है कि वह स्वयं नियमित क्षमा के लिए नहीं लिखता है। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि जिसे भी सज़ा मिली हो तो वह अपनी बातों और अपने कर्म से यह दिखाता है कि मुझे परवाह नहीं है तो इस से प्रणाली का सम्मान और इज़्ज़त ख़त्म हो जाती है, माफी का पत्र तो लिखे। जहां तक वह अहमदी होने के बारे में विश्वास है, तो हम अहमदियत को उस के दिल से नहीं ले सकते हैं। अगर एक काफिर लड़की के साथ शादी का मामला है, तो जो नियमित अनुमति प्राप्त करता है, तो उसके ख़िलाफ कोई कार्रवाई नहीं होती है। सज़ा की कार्रवाई इसलिए होती है कि निकाह ग़ैर अहमदी मौलवी से पढ़ाते हैं और इस तरह इस मौलवी को अपना इमाम मानते हैं जिस ने हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इमामत इनकार क्या होता है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि लड़की की शादी के बाद कई बाल लड़की बैअत कर लेती है लेकिन पति सज़ा रहती है।

* हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया स्वीडन, जलसा वार्षिक यू.के में शामिल हों और ख़ुद्दाम विभाग के इन्चार्ज मिलें और उनसे जानकारी लें कि कैसे हम अपने कामों में अपने कार्यक्रमों में सुधार कर सकते हैं और अधिक Active हो सकते हैं।

हुज़ूर अनवर ने अधिकारियों से कहा कि व्यक्तिगत संपर्कों से संबंध बढ़ता है। खाली संदेश से व्यक्तिगत कनेक्शन नहीं बनाता है। हुज़ूर अनवर ने सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया को फरमाया कि अपनी छुट्टियों में अपनी मज्लिसों का दौरा करें। आपका व्यक्तिगत संबंध मज्लिसों के पैदा होना चाहिए। जब तक व्यक्तिगत संपर्क नहीं होंगे तो ख़ुद्दाम की सहीह तरबियत नहीं हो सकती। दूसरे मुहतमिनीन भी अपनी मज्लिसों के दौरे किया करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ नेशनल मज्लिस आमला ख़ुद्दामुल अहमदिया ने ग्रुप तस्वीर भी खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

व्यक्तिगत तथा सामूहिक मुलाकातें

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने दफ्तर में तशरीफ ले गए। जहां प्रोग्राम के अनुसार फमिली मुलाकातें आरम्भ हुईं। आज शाम इस सेशन में 18 परिवारों के 56 सदस्यों ने अपने पसंदीदा आक़ा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया। और हर एक तस्वीर खींचने का सौभाग्य भी प्राप्त किया।हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने दया करते हुएअ शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्रों तथा छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी आयु के बच्चों को चाकलेट दिए। मुलाकातों का यह प्रोग्राम दोपहर नौ बज कर दस मिन्ट तक जारी रहा।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे। इस के बाद 9 बज कर 45 मिन्ट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मस्जिद नासिर में पधार कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा पढ़ाई। नमाज़ों के बाद,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर गए।

22 मई 2016 (बुधवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने सुबह 3 बज कर 45 मिन्ट पर नासिर मस्जिद में पधार कर नमाज़ फजर अदा की। नमाज़ को पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने दफतरी डाक, ख़त और रिपोर्ट देखे और निर्देश दिए। हुज़ूर अनवर विभिन्न कार्यालय के मामलों में व्यस्त रहे।

नेशनल आमला अंसारुल्लाह स्वीडन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार सवा ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ मुलाकात हॉल में आए जहां राष्ट्रीय मज्लिस अंसारुल्लाह स्वीडन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात शुरू हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई।

इस के बाद कायद अमूमी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के पूछने पर कहा कि स्वीडन में अंसार की संख्या 145 है और हमारी तीन मज्लिसें हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि लोलियो में चार अंसार हैं, इसलिए वहां मज्लिस स्थापित करें। इसी तरह, आपकी मज्लिस कोलंबो में स्थापित की जानी चाहिए। हुज़ूर अनवर ने सदर मज्लिस अंसारुल्लाह को अपने अंसार के मज्लिस में जाने का निर्देश दिया। हर जगह जाएं। अगर कहीं कोई न देने वाला है तो उस को कहें कि चन्दा दे। एक बार कहने से या एक बार जाने से बात नहीं होगी बल्कि बार बार कहने का आदेश है।

कायद अमूमी ने बताया कि दो मज्लिसें रिपोर्टें देती हैं और मज्लिसें नहीं देतीं

हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो रिपोर्ट नहीं देती उस से भी रिपोर्ट लें। और बाकी जहां मज्लिस स्थापित नहीं हैं वहां भी मज्लिस स्थापित करें।

* नायब सदर सफ II ने कहा कि अंसार के अंसार की संख्या मेरे ज्ञान में नहीं है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आपको अपना ख़ुद का कार्यक्रम बनाना चाहिए। पाठ्यक्रम पढ़ें, अपना ख़ुद का कार्यक्रम बनाएं। छोटी सी जमाअत है आपको दूसरों के लिए एक उदाहरण होना चाहिए। दस ग्यारह आदमी आप से संभाले नहीं जाते हैं।

* अमीन और एकाउंटेंट ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि सारा हिसाब रखा जाता है।

कायद इशाअत के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि यह तो ग्यारह महीने दुबई में रहते हैं इन के स्थान पर कोई नया कायद इशाअत बनाएं। इसी तरह हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि वह जो अपना चन्दा स्वीडन में अदा करते हैं इस का फैसला उन्होंने स्वंय नहीं करना केंद्र को यह तय करना है कि उन्हें दुबई में अपना चन्दा अदा करना है या स्वीडन में अदा करना है।

कायद तालीमुल कुरआन से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने पूछा कि आप समेत आमला के कितने लोग हैं जिन्होंने वक्फ आरज़ी किया है। यह जो कहा गया है कि मस्जिद में काम के लिए जाते रहें हैं मस्जिद में तो आप वकारे अमल के लिए जाते रहे हैं। यह वक्फ आरज़ी तो नहीं है? हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि कालमार में वक्फे आरज़ी करें। नमाज़ों की तरफ ध्यान दिलाएं कुरान करीम के पढ़ने की तरफ ध्यान दिलाएं और चन्दों की तरफ ध्यान दिलाएं और उन की तरबियत करें। और ठहरें और तरबियत के काम करें यह वक्फ आरज़ी है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि दूसरों के काम अपने खाते में न डालें। वक्फे आरज़ी का प्रोग्राम बनाएं और सब से पहले आमला वक्फे आरज़ी करे।

कायद तजनीद ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा की अंसार की संख्या 151 है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: जो भी अपने आप को अहमदी कहता है उस को अपनी तजनीद में शामिल करें चाहे वह चन्दा देता है या नहीं। इस तरह जो दूर हटे हुए हैं उन्हें सक्रिय करें। 151 अंसार तो एक मुहल्ले की मज्लिस में होते हैं। आप प्रत्येक के साथ व्यक्तिगत संपर्क कर सकते हैं। तो संपर्क करें। और अपने सम्बन्ध बढ़ाएं। ज़ईमों से सम्पर्क कर के अपनी तजनीद को पूर्ण करें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला ने फरमाया था कि चालीस साल तक तो एक ख़ुद्दाम बड़ा चुस्त होता है लेकिन जब अगले साल अंसार में कदम रखता है तो न जाने क्या होता है कि सुस्त हो जाता है। और आपने यह फरमाया कि आपको अंसार आने में बहुत सक्रिय होना चाहिए।

कायद तालीमुल कुरआन ने कहा कि हमारा 125 अंसार से संपर्क है। उनमें से तीन को सादा कुरआन पढ़ना नहीं आता। हुज़ूर अनवर ने फरमाया : अपने ज़ईमों से संपर्क करके प्रत्येक संपर्क करें। और सब की समीक्षा करें और अपने अंसार को वक्फे आरज़ी की आदत डालें और जिन्हें सादा कुरआन पढ़ना नहीं आता उन को सादा कुरआन पढ़ना सिखाएं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि अंसारुल्लाह ने रब्बाह में कार्यक्रम शुरू किया था कि उन्हें उन लोगों को पढ़ना नहीं आता उन को कुरआन पढ़ना सिखा दें। इसलिए, बड़ी आयु के अंसार को सिखाया गया और फिर वहां अस्सी साल के बूढ़ों की आमीन हुई है।

कायद तरबियत को संबोधित करते हुए हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि तरबियत एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य है। यदि सही तरबियत हो जाए तो आपकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है। आप को काम शुरू किए हुए तीन या चार महीने का समय हुआ है और अभी तक कोई काम नहीं हुआ। तीन चार महीने में तो दुनिया विजय हो जाती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अपना तीन-तीन महीने का लक्ष्य लें और उसे प्राप्त करें। हर तीन महीने प्रोग्रामिंग करके अपना लक्ष्य प्राप्त करें। अंसार को एम.टी.ए से जोड़ें। घर में बीवी बच्चों सभी का एम.टी.ए से सम्बन्ध हो। ख़ुत्बा जुम्अ: नियमित सुनें और घर में परिवार को भी सुनाएं। नमाज़ों की तरफ और कुरआन की तिलावत की तरफ ध्यान दें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यदि दो चार घर हैं, तो आपको फर्ज़ नमाज़ जमाअत के साथ पढ़नी चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़लीफ़ाओं के उद्धरण निकालकर अंसार को भेजें तो कोई न कोई पढ़ लेगा।

कायद नौ मुबाईन को हुज़ूर अनवर ने सम्बोधित करते हुए फरमाया कि नए बैअत वालों की तरबियत करने के लिए नया बैअत वाला होना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि जो पिछले तीन वर्षों से नए अहमदी हैं। यदि वे जमाअत की मुख्य धारा में शामिल नहीं हैं तो तरबियत वालों की कमी और सुस्ती है।

हुज़ूर अनवर ने कायद तरबियत नौ मुबाईन को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप गोथन बर्ग के कायद नहीं हैं बल्कि सारे स्वीडन के कायद तरबियत नौ मुबाईन हैं। इसलिए सारे देश के नौ मुबाईन के से आप के सम्पर्क हैं।

कायद शोबा ईसार ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि अभी काम शुरू नहीं किया। हुज़ूर अनवर ने फरमाया ओल्ड पीपुल्स होम पर जाएं और बूढ़े लोगों से मिलें। ख़िदमते ख़ल्क के कामों को प्रस्तुत किया करें। इस अवसर पर क्षेत्र के एमपी को बुलाएं मेयर को बुलाओ। प्रेस भी आए। यदि स्थानीय समाचार पत्र रिपोर्ट देगा तो इस माध्यम से इस्लाम के प्रसार के लिए रास्ता खोलेगा। अपने स्वयं के प्रस्तुत करने के लिए नहीं बल्कि इस्लाम की तब्लीग़ के लिए मीडिया में ख़बरें दें।

कायद माल ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि अंसार के मज्लिस के चन्दा का प्रतिशत एक प्रतिशत है। 150 अंसार में से 58 नियमित चन्दा देते हैं। एक लाख 34,000 करोड़ का हमारा बजट है और हमने 1 लाख 29 हज़ार करोंज़ प्राप्त किया है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: जो चन्दा नहीं देते धीरे धीरे उन के साथ सम्पर्क स्थापित करें और ऐसे लोगों को चन्दा का महत्व बताऐं, और उन्हें कहें कि अगर आप को मजबूरी है तो न दें लेकिन उन्हें चंचा के महत्व का पता होना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फरमाया, अंसार की पत्रिका में एक निबन्ध चन्दा के महत्व पर लिखें। मज्लिसों को सर्कुलर भिजवाया करें और याद करवाते रहे करें।

कायद वक्फ जदीद और कायद तहरीक जदीद को हिदायत देते हुए हुज़ूर अनवर ने फरमाया, कि आप का काम है कि जमाअत के सैक्रेटरी तहरीक जदीद और सैक्रेटरी वक्फे जदीद के सहायक बन जाएं और चन्दा वसूल करने में इन की सहायता करें।

कायद तब्लीग़ से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि पिछले तीन वर्षों में कितने अहमदी बनाए हैं। पिछले दस वर्षों में कितने अहमदी अंसार ने बनाए हैं? कायद तब्लीग़ ने बताया कि वह नहीं जानता था। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आप बिना तैय्यारी के मीटिंग में आए हैं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आमला का हर सदस्य को एक व्यक्ति को तब्लीग़ करे।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि अगर आप ने टारगेट करना है तो फिर एक द्वीप को लें वहां बार बार जाएं। लज्ना ख़ुद्दाम अंसार के साथ मिल कर प्रोग्राम बनाएं और फिर बारी बारी जाएं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि पम्फैलट तथा लीफ लेट्स का पीछा करें वरना लाभ नहीं होगा इस लिए बार बार जाना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि अगर पम्फेलटस बांटते हुए कोई विरोधी आप को गालियां दे तो इस से आप को सवाब मिलेगा।

आमला के एक मेम्बर ने कहा कि मैं अपनी फैमली के साथ मिल कर लीफ लैटस बांटता हूं। छोटा बच्चा भी साथ होता है लोग लीफ लेट्स लेकर खुश होते हैं कि अच्छा काम कर रहे हैं और इस ख़ुशी में बच्चे को आइस क्रीम देते हैं।

कायद सेहत जिस्मानी ने बाताया कि बैडमिंटन खेलते हैं फरमाया कि यहां भी खेल का प्रोग्राम बनाएं और माल्मो में भी रखे। वहां तो अब बड़ा स्पोर्टस हाल बन गया है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि अंसार अंसार पर रौब डालें ख़ुद्दाम पर रौब न डाला करें। आप अपनी ख़ुद समीक्षा करें कि कौन रौब डाल रहा है। कोई बार उहेदेदार नहीं होते दूसरे होते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , कभी-कभी, एक बात कठोरता से करने के स्थान पर इस तरह की जाए कि दूसरों को चिड़ाने वाली हो तो इस के भी दूरी पैदा हो जाती है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यहां के बच्चों और युवाओं की उठान अलग है इसलिए उन से बात करने में नर्मी होनी चाहिए। यदि आप कठोरता करेंगे

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 8 November 2018 Issue No. 45

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

तो बच्चे आपसे अलग हो जाएंगे या बहुत अधिक नर्मी करेंगे तो भी बच्चे ख़राब हो जाऐंगे। इसलिए मध्य मार्ग को अपनाएं।

* सदर साहिब मज्लिस अंसारुल्लाह ने कहा कि मज्लिस अंसारुल्लाह की स्थापना की जयंती के संदर्भ में, हम ने हुज़ूर अनवर की सेवा में 75,000 पाउंड की रकम जमा कर के देनी है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि यह पैसा मस्जिद महमूद मालमो के लिए मस्जिद फंड को दे दें।

व्यक्तिगत तथा फैमली मुलाकातें

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने दफतर पधारे। जहां प्रोग्राम के अनुसार फैमली मुलाकातें होनी थीं। आज सुब्ह के इस सेशन नें 23 फैमलीज़ के 79 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य पाया। गोथेनबर्ग के स्थानीय जमाअत के अलावा, नॉर्वे, जर्मनी और पाकिस्तान से आने वाले कुछ लोग भी शामिल थे। हर कोई हुज़ूर अनवर के साथ एक तस्वीर लेने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए छात्रों और छात्रों को कलम प्रदान किए और बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दिए। मुलाकातों का यह कार्यक्रम 1 बजकर 45 मिनट तक जारी रहा।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद तथा मिश्न हाऊस के बाहरी हिस्सा का दौरा किया और मस्जिद की सीमाओं के बारे में पूछा। यह मस्जिद एक पहाड़ी पर स्थित है, इसलिए इसकी सीमाएं अलग-अलग तरफ से भिन्न होती हैं। हुज़ूर अनवर ने कुछ तरफ से कुछ बाड़ लगाने का निर्देश भी दिया।

हुज़ूर अनवर पुरुषों की मार्की में भी पधारे और रसोई घर में भी गए। एक तम्बू लगा कर इस में अस्थायी रूप से चूल्हे रखे गए थे। हुजूर अनवर के पूछने पर फरमाया कि कौंसल से अस्थायी आज्ञा ली गई है। हुज़ूर अनवर ने चारों तरफ चेक पोस्ट की भी समीक्षा की जहां ख़ुद्दाम ड्यूटी पर मौजूद थे।

हुज़ूर अनवर कुछ देर के लिए मुबल्लिग़ आग़ा यह्या साहिब मुरब्बी सिलसिला के घर भी तशरीफ ले गए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद में तशरीफ लाकर नमाज़ जुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर ने दो निकाहों का एलान फरमाया।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

उस भिन्नता में तुम्हारे समझने का ही दोष हो और यदि किसी प्रकार भी यह भिन्नता दूर न हो तो ऐसी हदीसों को फेंक दो कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से नहीं है। यदि कोई हदीस कमज़ोर है परन्तु क़ुर्आन के अनुकूल है तो उसे स्वीकार कर लो क्योंकि क़ुर्आन उसकी पुष्टि करता है। यदि कोई हदीस ऐसी है जिसमें किसी भविष्यवाणी की सूचना है। परन्तु हदीस के विद्वानों के निकट वह कमज़ोर है, और तुम्हारे काल में या इस से पूर्व उस हदीस की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई है तो उस हदीस को सत्य समझो और ऐसे हदीस के विद्वानों और हदीस को बयान करने वालों को दोषी और झूठा समझो, जिन्होंने इस हदीस को कमज़ोर और बनावटी घोषित किया हो।

★**हाशिया :-** अहलेहदीस रसूल का कार्य और कथन दोनों का नाम हदीस ही रखते हैं। हमें उनके नामकरण से कोई मतलब नहीं। वास्तव में सुन्नत अलग है जिसके प्रचार का कार्य हज़रत मुहम्मद साहिब ने स्वयं किया और हदीस अलग है जो बाद में एकत्र हुई। इसी से।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 61 से 63)

☆ ☆ ☆

कलाम
सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इस्लाम और बानिये इस्लाम से इश्क़

हर तरफ़ फ़िक्र को दौड़ा के थकाया हम ने
कोई दीं, दीने मुहम्मद(स) सा न पाया हम ने
कोई मज़हब नहीं ऐसा कि निशाँ दिखलाए
ये समर बाग़े मुहम्मद से ही खाया हम ने
हम ने इस्लाम को ख़ुद तजुर्बा करके देखा
नूर है नूर, उठो देखो सुनाया हम ने
और दीनों को जो देखा तो कहीं नूर न था
कोई दिखलाए अगर हक़ को छुपाया हम ने
थक गए हम तो इन्हीं बातों को कहते कहते
हर तरफ़ दावतों का तीर चलाया हम ने
आज़माइश के लिए कोई न आया हर चन्द
हर मुख़ालिफ को मुक़ाबिल पे बुलाया हम ने
यूँहि ग़फ़लत के लिहाफ़ों में पड़े सोते हैं
वो नहीं जागते सौ बार जगाया हम ने
जल रहे हैं ये सभी बुगज़ों में और कीनों में
बाज़ आते नहीं हर चन्द हटाया हम ने
आओ लोगो ! कि यहीं नूरे ख़ुदा पाओगे
लो तुम्हें तौर तसल्ली का बताया हम ने
मुस्तफ़ा पर तेरा बेहद हो सलाम और रहमत
उस से ये नूर लिया बारे ख़ुदाया हम ने

(दुर्रे समीन)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad